# दिन का शहर, रात का शहर

मूल (असमीया ) मुकुट दत्त
अनुवाद - विष्णुकमल डेका

नौकरी के लिए आयोजित उम्मीदवारों की चयन प्रक्रिया दरअसल नौंटकी ही है। उम्मीदवारों का चयन पहले ही तय रहता है। इस प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका लेता है रुपयों का वजन, योग्यता विचारनीय नहीं होती। वैसे राजनैतिक प्रभाव हो तो सोने में सुहागा, नौकरी पक्की। विगत तीन सालों में इस तरह की चयन प्रक्रिया में हिस्सा लेते लेते विनन्द बहुत हताश है फिर भी एक ही नाटक को दोहराते रहने को मजबूर है। ट्रेजरी चालान भरना, वायोडाटा सहित आवेदन देना फिर इंटरव्यू के दिन की अपेक्षा, आम बात हो गई है। उसके लिए आज के इंटरव्यू में जो सवाल पूछे गये थे, वह इस नौकरी के लिए प्रसांगिक हो ऐसा वह नहीं मानता। उससे पूछा गया था पाकिस्तान और भारत के प्रति अमरिका की विदेश नीति को सही मानते हो ? एक तकनीकी डिप्लोमाधारी को चिकित्सा शास्त्रीय सवाल पूछने जैसा बेतुकी हरकत नहीं तो क्या हैं? नौकरी न देना हो मत दो। यह अनावश्यक सवाल क्यों ? विनन्द सोचकर पार नहीं पाता। इस तरह कितने दिनों तक नौकरी के लिए इंटरव्यू देता रहेगा। तब तक सरकार द्वारा निर्धारित उम्र सीमा भी अतिक्रम कर जाएगा। सरकार ही तो पैदा करती है बेकारी। मानव संपदा का निर्लज्ज अपव्यय। इसी कारण हताशाग्रस्त युवाजन पथभ्रष्ट हो जाते हैं। उग्रवाद का सहारा लेते हैं। इंटरव्यू कमरे से घीर गति से निकल आया था विनन्द । मन में छाई थी निराशा और ग्लानि। रोग और चिंताग्रस्त माँ का दुबला चेहरा उसकी आँखो से गुजरने लगता है। माँ को दी जानेवाली दवाईयाँ पिछले दस दिनों से नहीं दे पा रहा था, आर्थिक दीनता के कारण। पिता कई महिनों से गुमसुम रहने लगे थे। असल में उसके पिता हताशाग्रस्त हो चुके थे। एक समय पिता की हालत अच्छी थी। आस- पड़ोसवालों से उसने सुना था कि उनका कारोबार इसतरह ढीला हुआ कि ऊबर नहीं सके। उसके पिता कहा करते थे 'Hope for the hest, think for the wrost अच्छे दिनों का स्वप्न लिए वे मूक हो गये हैं। माँ आस-पास के बच्चों का ट्यूशन करके प्राप्त सामान्य रकम से घर चलाती है। हायर सेकेंडरी के बाद उसकी पढ़ाई रुकने ही वाली थी। मौसी ने आगे की पढ़ाई का जिम्मा लिया तो वह डिग्री हासिल कर पाया। तब तक आकाश में बादल छाने लगा था। यह बरसात शुरु होने की सूचना थी। किसी तरह स्टेशन पहुँचने की कोशिश में वह जल्दी जल्दी चलने लगा। स्टेशन अभी दो मील दूर है। उसके गाँव को जानेवाली आखिरी बस भी निकल गई होगी। अब ट्रेन ही उसका सहारा है। वह भी जाती है आधी रात के बाद्। वह चल ही रहा था कि अकस्मात गोली चलने की आवाज सुनकर पीछे मुड़कर देखा, साँझ की झटपुटे में एक आदमी लंगड़ाता हुआ उसकी तरफ आ रहा था और उसके पास आकर गिर पड़ा। उसके पीछे पीछे आ रहे दो बाइक सवार युवक पिस्तोल

से एक और गोली दागकर मुड़कर भाग गये थे। हतचकित विनन्द अप्रत्याशित आंतक में थर थर कांपने लगा। उसे लगा जैसे वह चल नहीं पा रहा। कोई देख लें और उसे ही हत्यारा समझ लें तो, विनन्द का गला सूख आया था। आखिरी बार चलाई गई गोली शायद उसके पेट के नीचले हिस्से पर लगी थी। खून की बौछार से उसका सफेद सर्ट लाल हो गया था। कुछ कहना चाहकर घायल युवक ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया था। मृत्युपथ यात्री की ओर बढ़ गया विनन्द । "मेरो मृत्यु निश्चित है। आपको अच्छा आदमी मानकर एक अनुरोध करता हूँ। मेरे जेब में एक 'मेमोरी कार्ड' और एक पैन ड्राइव' है। मेरे हत्यारे दोनों शहर के रइसजादों की औलाद हैं। उन्हें राजनैतिक आश्रय प्राप्त है। वे ड्रग्स और नारीदेह के कारोबारी है। मैं एक सॉफ्टवेर डिग्रीधारी हूँ। नौकरी की तलाश में आकर दुर्भाग्यवश इनके चक्कर में पड़ गया। एक इंटरव्यू के दौरान इन लोगों से सामान्य जान-पहचान हुई थी। उन लोगों ने मुझे 'कोल्ड ड्रिंक्स' में कुछ मिलाकर पिलाकर बेहोश कर दिया। होश आने पर मैंने अपने आपको में पूर्ण नग्नावस्था में एक पलंग पर सोया हुआ पाया। पास ही एक नग्नप्राय नारी बैठी हुई थी। उन लोगों ने उस नारी के साथ अस्लील हरकतों का फोटो दिखाकर मुझे उनके कारोबार का साथी बनने को मजबूर कर दिया। मुझे ड्रग्स सप्लाई में लगाया गया। मैंने उनके चंगुल से बचने का प्रयास किया तो मेरी यह हालत हुई। मेरा अंतिम अनुरोध यह है कि मेरी 'मेमोरी कार्ड' और 'पैन ड्राइव' को किसी संवाददाता को दें जो इस अवैध कारोबार का भंडाफोड़ सके।" और वह बेहोश हो गया।

विनन्द चारों और सावधानी से नजर दौड़ाकर झटपट दूर हट गया। तब तक बादल बरसने लगे। संभावित विपत्ति और वर्षा से बचने के लिए वह दौड़ने लगा बसस्टॉप की ओर सीने की धड़कने तब तक खत्म नहीं हुई थी। ऐसी विपत्ति में कभी नहीं पड़ा था वह। बसस्टॉप के छत में बरसात की छपछप आवाज विनन्द के मन को डरा रही थी। वह सोचने लगा, कब खत्म होगी यब भयानक रात भीगी हुई कमीज शरीर में सटने से उसे जाड़े का अनुभव हुआ। उसे भूख भी लगी थी। सुबह छह बजे ही दो मुट्ठी भात खाकर घर से निकला था। तब से अब तक एक बूंद पानी भी नसीब न हुआ। बसस्टॉप के बैंच पर सिकुड़ कर बैठ गया बर्षा उस पर झटास मार रही थी। उसकी आखों में नींद छाने लगी थी । एक स्कार्पियो' कार आकर सुनसान पड़े बसस्टॉप के सामने रुकी। वह चौकन्ना हो उठा। दिल धकधक करने लगा, न-जाने कौन सी विपत्ति उसे घेर ले। पर कार से किसी को उतरने न देखकर विनन्द आश्वस्त हुआ। सुनाई दे रहा था हँसी किलकारी की आवाज कार के अन्दर से।' अब तक जी नहीं भरा तेरा' फिर हँसी की उछाल गुंजा। बातों में नशे की छलक। विनन्द निश्चित हुआ कार में थे प्रेमी-प्रेमिका का जोड़ा जो अवैध प्रेम प्रसंग में मशगूल थे।

शहर के नव धनाढ्य परिवार के उश्रृंखल युवक-युवतियों की धारणा है कि कल्ब - बार में शाराब पीकर न नाचे तो स्टेटस लाघव होता है। जिन्दगी को भोगने के लिए नवधनाढ्य परिवार की युवतियाँ अपने शरीर को

पर- पुरुष के सामने परोसने से नहीं हिचकिचाती। दिन के उजाले में जगमगाते शहर का, रात का पंकिल रूप कितना जधन्य है। फिर भी राज्य के धूरंधर बुद्धिजीवि वर्गों का आवास स्थल है यह शहर, राज्य के भाग्य नियंत्रक राजनेतागण यहीं विचरते हैं। व्यापार-वाणिज्य एवं विविध प्रकार से धन कमाने हेतु आलादीन का चिराग यहीं है। दिन के उजाले में सभ्य एवं सदाचारी लोग भाषण को बौंछार से जन साधारण को मोहित कर रखने वाले नेताओं के भंड-स्वरुप से शासन तंत्र में भ्रष्ट्राचार भर गये हैं। फल स्वरुप जीवन यौवन का क्षय इस तरह दिखाई देने लगा है।

इतने में ब्रेक मारती हुई रुक गई रात की पेट्रोलिंग ड्यूटी की एक पुलिस की जीप । अफसर के साथ पुलिस के सिपाहियों ने घेर लिया स्कार्पियो कार को ड्राईविंग सीट का दरवाजा खोल दिया था पुलिस अफसरने। देखा गाड़ी के अन्दर बेतरतीब हालत में युवक-युवती जोड़े को। 'अरे ओ रोमिओ-जुलियट निकल बाहर।' गुस्से में अफसर ने गुरीया, 'भादों के कुत्ते की तरह आचरण करते हुए तुम्हे जरा भी शर्म नहीं आती।' 'ए अफसर, जुबान पर लगाम लगाओं।' कहते हुए रिवाल्वर के साथ हिलते-डुलते उतर आया युवक। 'अपने बाप को पहचाना नहीं। नौकरी से वर्खास्त करवा सकता हूँ तुम्हे, समझे।' तब तक उसकी संगीनी भी उतर आयी। ' क्या हो रहा है जीत ? Control yourself, Cool down कहती हुई युवक के हाथ से रिवाल्वर ले लो। इतने में वयस्क सिपाही बोगाधर नाथ ने एस. आई. सा. 'ब को पीछे हट जाने का ईशारा करते हुए फुसफुसाकर कहा 'इन्हे छोड़ देने में ही भलाई है साब।'

बोगाधर की बात समझ नहीं पा रहा था एस. आई. सुकुमार दत्त सोचा, बोगाधर की बात में अवश्य ही कोई रहस्य है। इस महानगर में बोगाधर पुराना आदमी है। पच्चीस साल नौकरी करने का तजुर्बा है। रिटायर होने में ज्यादा दिन नहीं है। इस शहर का नखसीख से पूर्ण परिचित है वह। कार के पास खड़े युवक को विनम्रता के साथ योगाधर ने कहा, 'आपलोग जाइए सर'। कार चली गई। 'साला हरामी की औलाद, बाप के दम पर कितने नाचोगे।' कार की ओर गाली बरसाते हुए बोगाधर ने कहा, 'सर यह कुलांगार हमारे बिग बॉस का वंश रक्षक है। इसके गुणों की सीमा नहीं है। चक्रवर्ती सर को एक रात में ही बार्डर पर ट्रांसफर होना पड़ा था इसके चलते, यह प्रति सप्ताह गर्लफ्रेंड बदलता है, एक से जी नहीं भरता। एक भ्रष्ट्रचारी आईएएस की लड़की थी वह। एक दिन देखेंगे सती सावित्री की तरह किसी को बरमाला पहना डालेगी। उसका जीना हराम नहीं करेंगी यह दूसरो का अहित न चाहते हुए भी कहना पड़ता है कि इन्हें 'एइडस' क्यों नहीं हो जाता ?" बरसात में भीगने के कारण विनन्द जाड़ा महसूस कर रहा था। अनजाने में एक छींक निकल गया था। सदा सतर्क बांगाधर नाथ जीप से उतर कर टार्च मारकर पूछा 'कौन है ?"

जबाब आया, 'मैं'।

" तूं कहाँ का गर्वनर है जो 'मैं' कहते ही पहचान लूंगा।"

तब तक एस आई सुकुमार दत्त ने उस पर टार्च का फोकस डालकर आश्चर्य हुआ। " अरे विनन्द तू ! यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"सर

'एक इंटरव्यू देने आया था। बर्षा होने के कारण यहाँ रुका हुआ हूँ। रात की ट्रेन से वापस जाऊंगा।' इतनी बरसात में कैसे जाओगे ? आ, गाड़ी में बैठ । तुम्हें स्टेशन पर उतार दूंगा। तुम तो बिल्कुल भीग चुके हो। अच्छा चलो।" विनन्द गाड़ी में बैठा। सुकुमार ने बात जारी रखते हुए कहा, तुमने तो देखी ही है पुलिस वालों की दुर्गति । दिन हो या रात समय-असमय ड्यूटी के पीछे दौड़-धूप करनी पड़ती है और फिर हम संचालित होते हैं, ऊपर वाले अफसर या नेताओं के हुक्म के मुताबिक Under pressure काम करना पड़ता है। पुलिस को Free hand देकर तो देखते, चोर बदमाश लूटेरों की हेकड़ी बंद हो जाती एक ही दिन में, अभी दो घंटे पहले यहाँ से थोड़ी दूरी पर गोली से घायल एक व्यक्ति को उठाकर कर इबुलेंस से अस्पताल भेजा गया। दो गोली निकाली गई हैं पर घायल व्यक्ति अभी भी संज्ञाहीन पड़ा है। भाग्य में लिखा होगा तो बच भी सकता है। खून काफी बह गया है बेचारे का। राजधानी शहर में ऐसी हालत है। आदमी दिन-बि-दिन जानवरों से भी बदतर होता जा रहा हैं। कुछ लोग अपने जीवन को भोगने के लिए न्याय नीति की सारी मान्यताएं तोड़ने में लगे हैं।" विनन्द सुन रहा था सुकुमार की बातें। कुछ देर पहले घटे गोली कांड का दृश्य याद कर वह सिहर गया। आंशिक रूप से ही सही वह उस घटना का प्रत्यक्षदर्शीं था। फिर भी वह सुकुमार को कुछ न कहना ही ठीक समझा । उसे स्टेशन पर उतार कर सुकुमार जीप लेकर चला गया। यथा समय ट्रेन चलने लगी। डिब्बे में पहले से ही यात्री भरे थे। साधारण यात्री डब्बा था फिर भी कुछ यात्रियों ने सोने की व्यवस्था कर ली थी। एक सोये हुए यात्री की पैर की तरफ थोड़ी जगह निकाल कर वह बैठ गया था। डब्बे की धीमी रोशनी में उसकी की नजर एक डरी सहमी महिला पर पड़ी। 'अरे यह तो शोफाली है, उसके साथ ही पढ़ी थी माध्यमिक कक्षा में।' विनन्द के गाँव के पास ही शोफाली का गाँव था। 'शेफाली तुम इतनी रात को अकेली ? बैठो उसी सीट के पास विनन्द खड़ा हो गया। कुछ न बोलकर शेफाली सहमी-सिमटी सीट पर बैठ गयी।

रात की ट्रेन में इस तरह अकेले यात्रा करने का निर्णय लिया है तो निश्चित ही कोई कारण होगा। विनन्द सोच ही रहा था कि अचानक शेफाली उसका हाथ पकड़कर सुबकने लगी। विनन्द ने अपना एक हाथ उसके सिर को सहलाते हुए सांत्वना देने की कोशिश की। " में खत्म हो गई विनन्द। मुझे तुम्हारे सहारे की जरुरत है।

स्टेशन के प्लाटफार्म पर मैंने तुम्हे देखा था। इसलिए तुम्हारे पीछे पीछे आकर इसी डब्बे में चढ़ गयी। मेरी आँखो के आगे अंधेरा ही अंधेरा है। मैं कोई विपत्ति में फँस गई तो मेरी माँ और भाई का क्या होगा ?" उसकी आँखों से आँसुओं की झडी लग गई थी।" क्या हुआ? खुलकर बोलोगी भी ?" "मैं हत्यारिन हूँ। अभी अभी एक हत्या कर आई हूँ। " यह सुनकर विनन्द काँप गया |

आज का दिन ही शायद उसके लिए मनहूस है। एक के बाद एक दुर्योग का सामना करना पड़ रहा है। क्षणिक निरखता के बाद वह बोलने लगी- "तुम्हे सिरे से बताती हूँ अन्यथा तुम मुझे गलत समझ सकते हो। सुनों, मैं उस समय ऑफिस में थी शाम के चार बजने को थे। ऑफिस के चपरासी ने आकर कहा ' साहब ने बुलाया है।' टेबल पर कागजात संभालकर मेनेजर साहब के कमरे में गई। फाइल से सिर उठाकर मेनेजर ने कहा "मिस भराली, डिरेक्टर साहब ने आपको तलब किया है। जाते समय यह दो फाइल लेती जाना। डिरेक्टर साहब की तबीयत ठीक नहीं हैं। इसलिए दोपहर के बाद ऑफिस नहीं आ सके। आपको शायद कोई Important Dictation दे सकते हैं । " "सर, आध घंटे में ऑफिस की छुट्टी हो जाएगी। अभी जाती हूँ तो उनके पास पहुँचने तक रात हो जाएगी। फिर रात को मैं कैसे लौटुंगी। कल दिन में गई तो.....।"

"नौकरी बरकरार रखने के लिए हुक्म मानना पड़ता है। " मेनेजर ने शेफाली की बात पूरी करने से पहले ही टोक दिया।

निरुपाय होकर उसने जाने का निश्चय किया। डिरेक्टर सा'ब के बंगले के दरवान को शायद पहले से निर्देश था। सलाम ठोक कर साहब का कमरा दिखा दिया। कॉलिंग बेल बजाने पर एक मधुर संगीत सुनाई पड़ा। -'Please Get in." मैं अंदर गई। बड़ा सा वातानुकूल भव्य कमरा । "Please sit down" कमरे के एक कोने के पलंग पर आराम फर्मा रहे साहब ने कहा, "So you have come ? Wait for few minutes में fresh होकर आता हूँ ।" तब तक दरवाजे के बाहर एक लाल बत्ती जल उठी। बैठने के पाँच मिनट बाद वर्दी पहना हुए एक बैरे ने एक कप कॉफी और प्लेट में काटलेट दे गया। सामने के एक सोफे पर पहले से ही एक बिल्ली बैठी हुई थी, मैंने खयाल नहीं किया। वह बिल्ली छलांग लगाकर आयी और प्लेट का काटलेट उठाकर एक ओर ले गयी और खाने लगी। कारलेट खाने के बाद बिल्ली क्षण भर छटपटाई और बेसुध हो गई। मेरे नारी मन को विपत्ति का आभास मिल गया था। बिल्ली की उपस्थिति संयोगवश थी फिर भी उसने मुझे सचेत कर दिया। बेसुध बिल्ली को मैंने पलंग के नीचे छुपा दिया। पन्द्रह मिनट के अंतराल में एम. डी सा'ब अन्दर आये। मैं मन ही मन प्रस्तुत थी आत्मरक्षा के लिए। *'Hai baby. No hesitation आराम से बैठो।" कहकर मुझसे सटकर बैठ गये और मेरी बाह पकड़ने की कोशिश को की। "सर, मेनेजर सा'ब ने तो आपसे dictation लेने के लिए भेजा था। " "Hang your dictation" बोलकर मुझे अपने आगोश में लेना चाहा

"सर, मैं आपकी employee हूँ, आप हैं employer साथ ही आप मेरे पिता तुल्य हैं।" " So what ? पिता तो नहीं हूँ। मुझे खुश करोगी तो तुम्हारा future bright कर दूंगा। शहर के मेरे गेस्ट हाऊस में तुम आराम की जिंदगी गुजार सकोगी।"

'सर, मैं आपका पैर पकड़ती हूँ, मेरा सर्वनाश न करें। मैं देह व्यापार करने के लिए शहर नहीं आयी थी। आयी थी नौकरी करके साधारण सी जिंदगी जीने।"

मैं उनके बहु-बंधन से मुक्त होने की जितनी कोशिश कर रही थी वे उतनी ही आसुरिक शक्ति प्रयोग करने लगे थे। खींचातानी में मेरा ब्लाउज फट गया। एक अबला लड़की एक असुर से कैसे मुकाबला करती ? उस पर वे थे मदमस्त मुझे उठाकर पलंग पर फेंक दिया। मैं अपनी आँखो से अंधेरा देखने लगी। "हूँ। सती-साध्वी बनती है साली।" कहकर वे शिकारी कुत्ते की तरह मेरा चीर हरण करने पर उतारु हुए। पलंग के सिरहाने की ओर एक टेबल पर एक पीतल का फूलदान रखा हुआ था। मैंने आव देखा न ताव फूलदान उठाकर उनके सिर पर मार दिया। 'आह!' चिल्लाकर वे फर्श पर गिर पड़े। मैं तुरंत पलंग से उतरकर पलायन करने की सोची। मेरे कपड़ो में उसके सिर के खून के छींटे, ऊह ! कैसी अजीब सी गंध थी उस खून में अपने को अपवित्र महसूस करने लगी थी। दरवाजा खोलने की कोशिश की पर दरवाजा वाहर से बंद था। पिछवाड़े की दरवाजे से मैं भागी । सौभाग्य से गेट पर दरवान नहीं था। बरसात के कारण सड़क पर लोगों का आना-जाना भी नहीं था। मेरा पहनावा ठीक नहीं था। यह सोचने का समय नहीं था, मुझे तो जैसे तैसे भागना था। किसी तरह आकर अपने कमरे में घुस कर साँस ली। नहा धोकर कपड़े बदले। मेरी रुममेट कमरे में नहीं थी। बी. एड का क्लास करने गई हुई थी। मैं कमरा बंद कर एक ऑटोरिक्से से स्टेशन पहुँची। बाकी तुम देख रहे हो।

सहपाठी विनन्द को घटी घटना के बारे में बोलकर उसने अपने मन को हल्का कर लिया। फिर वह सुबकने लगी शायद वह अपने भविष्य के बारे में आतंकित थी। एक दीर्घ श्वास लेकर विनन्द ने सांत्वना के साथ ढाड़स बंधाया, "तुमने जो किया वह गलत नहीं था। वह राक्षस मर भी गया तो तुम्हें पाप नहीं लगेगा। आत्मरक्षा का अधिकार तुम्हारा भी है। मैं तुम्हारे साथ हूँ। घबराना नहीं। हमारे साथ पढ़े सुकुमार इस समय यहाँ के पुलिस अफसर हैं और हम लोगों से सीनियर अविनाश भी इसी शहर में मेजिस्ट्रेड है। हम सभी तुम्हारी रक्षा करेंगे। अब तुम टायलेट जाकर मुँह-हाथ धोकर फ्रेश हो आओ। ये बातें अभी किसी से कहने की जरूरत नहीं है। अपने घर में भी नहीं । रुममेट को अपने चले आने की सूचना फोन पर दे देना।"

शेफाली निश्चिंत सा होकर टायलेट की ओर बढ़ गई।